ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-257-260,YEAR- DEC.2016

पत्रकारिता : स्वरूप एवं चुनौतियाँ

❑ डॉ0 प्रियंका गुप्ता

मनुष्य के जीवन में प्रारम्भ से लेकर आज तक पत्रकारिता का बड़ा महत्व रहा है। भारतीय पत्रकार अपनी देशभक्ति, निष्ठा, लगन, परिश्रम एवं अपूर्व त्याग के लिए विख्यात रहे हैं। प्रारम्भ में स्वाधीनता के लिए संघर्ष एवं राष्ट्रीयता के लिए प्रचार करना ही उनका कर्त्तव्य था। पत्रकारिता अपने ऊँचे आदर्शों का सदा से ही पालन करती रही है। प्रारम्भिक पत्रकारिता के पत्रकारों के आदर्श महान थे और साधन सीमित। आज पत्रकारिता के साधन असीमित है किन्तु उनके आदर्श छोटे हो गये हैं। सम्प्रति पत्रकारिता के स्वरूप में पर्याप्त बदलाव आया है।

भारत में पत्रकारिता को पहले मिशन के रूप में अपनाया गया। पत्रकार राजकिशोर के अनुसार, ''पत्रकारिता खबरों की सौदागरी नहीं है। न उसका काम सत्ता के साथ शयन है। उसका काम जीवन की सच्चाईयों को सामने लाना है।''

पत्रकारिता अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण विज्ञान है। आदर्श कला है, उत्तम व्यवसाय है और मानव चेतना का उद्दीपक है। युगबोध के प्रमुख तत्वों के साथ ही मानवता के विकास और विचारोत्तेजन का राजमार्ग ही पत्रकारिता है जिससे जनजीवन पल–पल उद्वेलित होता रहता है।

''समाज, संस्कृति, साहित्य, दर्शन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रसार के चलते मानव संघर्ष, क्रांति, प्रगति–दुर्गति से प्रभावित जीवन सागर में उठने वाले ज्वार–भाटा को दिग्दर्शित करने वाली पत्रकारिता अत्यन्त महत्वपूर्ण हो चुकी है। जनता, समाज, राष्ट्र और विश्व को गरीबी का भूगोल, पूँजीपतियों का अर्थशास्त्र और नेताओं की समाजशास्त्र पढ़ाने में पत्रकारिता ही सक्षम है। इस जीवंत विद्या से जन–जन के दुःख–सुख, आशा–आकांक्षा को मुखरित किया जाता है।'' (अर्जुन तिवारी)

आजादी से पूर्व पत्रकारिता का प्रारम्भ अंग्रेजी सत्ता के फौलादी पंजे से मुकाबला करने के लिए हुआ था। आर्थिक संकट पथ की सबसे बड़ी बाधा थी किन्तु फिर भी पत्रकारों के जोश में कोई कमी नहीं थी। श्री रामचन्द्र शर्मा के ''महारथी पत्र'' की पंक्तियाँ जीवंतता एवं विदेशी सत्ता के प्रबल प्रतिरोध की साक्षी है–

'चढ़ रहा है हर जुबां पर अब जुनुने लाजपत,
क्या कोई तूफान लायेगा ये खूने लाजपत?
हो रहें है जर्द चेहरे आज क्यों हुक्काम के,
सुर्ख होने चाहिए थे पी के खूने लाजपत।

स्वतंत्रता से पूर्व की पत्रकारिता तेजस्वनी, ओजस्वनी, निर्भय, परम न्याय परायण तथा सर्वतः पुण्य संचारिणी रही है। तभी तो पं0 नेहरू, महात्मा गाँधी, एनी बेसेण्ट, गोपाल कृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी तथा चितरंजन दास जैसे देश भक्तों को पत्रकारिता से लगाव था। पत्रकारिता राष्ट्रीय जागरण का सशक्त साधन थी।

डॉ0 सुशीला जोशी ने पत्रकारिता का स्वरूप निम्न प्रकार से व्याख्यापित किया है– 1. समाज की गतिविधियों का दर्पण 2. सूक्ष्म शक्ति 3. नीर–क्षीर विवेक 4. समाजिक मूल्यों की नियामिका 5. परिवेश से साक्षात्कार 6. विविधात्मक और व्यापक 7. कुशल चिकित्सक 8. सम्प्रेषण का माध्यम 9. महान लक्ष्य 10. प्रेरणादायी व जागरूक 11. मानवीय गुणों के विकास में सहायक 12. सुदृढ़ कड़ी 13. जीवन का आधार।''

सार रूप में पत्रकारिता के विविध स्वरूपों

❑ ऐसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग एम.एच. पी.जी. कॉलेज, मुरादाबाद, (उ0प्र0) भारत

को निम्न भाँति विवेचित किया जा सकता है–

1. समाज की गतिविधियों का दर्पण – पत्रकार भी सभी की तरह एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर समाज की उन्नति–अवनति, दुःख–सुख सभी से प्रभावित होता है। वह जो कुछ भी अनुभव करता है उसी का अनुभव समाज को भी कराता है। यही कारण है कि पत्रकारिता ऐसे दर्पण के सदृश्या है जिसमें समाज में घटित होने वाली घटनायें अपने यथार्थ रूप में प्रतिबिम्बित हो उठती हैं। स्वस्थ पत्रकारिता न केवल घटनाओं का विश्लेषण जरूरी है, वरन् विसंगतियों को भी दूर करने का भी प्रयास करती है। ''इस प्रकार पत्रकारिता सामाजिक जीवन की सत्–असत्, दृश्य–अदृश्य और शुभ–अशुभ छवियों का दर्पण है। इसका स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है।

2. सूक्ष्म शक्ति – पत्रकारिता सामान्य घटनाओं को उजागर करने के साथ–साथ मन की सूक्ष्म भावनाओं का चित्रण करने में भी सक्षम है। आजादी की लड़ाई में राष्ट्र के कोने–कोने में जागरण, नवस्फूर्ति और नवनिर्माण के मंत्र को फूकने का कार्य पत्रकारिता द्वारा ही सम्पन्न हुआ था। पत्रकारिता स्वतंत्रता की ध्वजा वाहक सिद्ध हुई। एक सजग प्रहरी के समान पत्रकारिता ने आजादी के दीवानों का पथ प्रदर्शन किया। हर पल घटित होने वाली कभी भयावह, कभी चमत्कारिक घटनाओं के बीच मानव मन को सहज बनाने का कार्य पत्रकारिता ही करती है।

3. नीर–क्षीर विवेक – स्वस्थ पत्रकारिता सदैव निष्पक्ष रहकर व्यक्ति, वस्तु या घटना के निषेधात्मक ही नहीं वरन् सकारात्मक पक्ष को उजागर करती है। इसी कारण इसे पंचम वेद कहा गया है और इसलिए जनता लिखी हुई इबारत पर विश्वास करती है। विधायक और कल्याणकारी दृष्टि द्वारा लोक रुचि के परिष्कार का महान कार्य पत्रकारिता द्वारा ही संभव है।

4. सामाजिक मूल्यों की नियामिका – ''पत्रकारिता यदि सचमुच पत्रकारिता है तो वह एक मार्गदर्शिका, जीवन निर्मात्री और सामाजिक मूल्यों की विधायिका ही हो सकती है, साथ ही सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक प्रतिमानों को स्थापित करती है।'' (डॉ0 सुशीला जोशी)

समाज के विभिन्न वर्गों को उनके कर्त्तव्य का बोध कराती है। संकटकालीन परिस्थितियों में जनता का मनोबल बढ़ाकर सौहार्दभाव स्थापित करती है। सर्वधर्म समभाव एवं वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का प्रसार करती है। मानव मूल्यों की स्थापना कर–जन जीवन को विकास की ओर अग्रसर करती है।

5. परिवेश से साक्षात्कार – ''पत्रकारिता के जरिए न केवल हम अपने परिवेश से परिचित होते हैं परन्तु दूर–दराज के देशों से भी हमारा साक्षात्कार कुछ ही क्षणों में हो जाता है।'' (डॉ0 सुशीला जोशी)

आज संचार माध्यम के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन होने के कारण विश्व के किसी भी कोने में घटित होने वाली घटना को न केवल हम सुन सकते हैं वरन् देख भी सकते हैं। यही नहीं, इण्टरनेट के द्वारा हम अपनी राय भी प्रकट कर सकते हैं। इसलिए आज का मनुष्य एक सामाजिक प्राणी नहीं वरन् अन्तर्राष्ट्रीय प्राणी बन गया है।

6. विविधात्मक और व्यापक क्षेत्र – दैनिक जीवन की घटनाओं को प्रकाश में लाना ही पत्रकारिता नहीं है। यदि हम विचार करें तो पायेंगे कि आज जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहाँ पत्रकारिता का प्रवेश न हो। प्रातः से रात्रि तक, रसोई से अंतरिक्ष तक, गर्भावस्था से लेकर मृत्यु के क्षणों तक कहीं भी कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है जो पत्रकारिता का विषय न हो। सामान्य जन को उनकी भाषा में उनके अधिकारों को समझाने, महिला जगत, बाल जगत, क्रीड़ा जगत, स्वास्थ्य जगत, परिवार कल्याण, शिक्षा जगत से सम्बन्धित जानकारी देने का कार्य आज पत्रकारिता के द्वारा ही सम्पन्न होता है।

7. कुशल चिकित्सक – 'पत्रकारिता एक कुशल चिकित्सक की तरह सामयिक परिस्थितियों एवं घटनाचक्र की नाड़ी की जाँच कर उसके स्वास्थ्य को सुधारने का कार्य करती है। पत्रकार के पास एक

तीखी व तेज नजर तो होती ही है अपितु शिव की सी तीसरी आँख भी होती है। यही कारण है कि पत्रकार परिवेश के शरीर में दौड़ते हुए रक्तचाप की परीक्षा करता है उसकी धड़कनों का हिसाब रखता है और जब वह अधिक विकृत होने लगता है, तब पत्रकार कुशलता पूर्वक सामाजिक परिवेश की एक्स–रे रिपोर्ट प्रस्तुत करता है। यह काम वह फोटो पत्रकारिता के माध्यम से करता है।' (डॉ0 सुशीला जोशी)

जिस प्रकार चिकित्सक शरीर के रोगों का निदान करता है, उसी प्रकार पत्रकार समाज में व्याप्त दोषों के निवारण के लिए न केवल जनता को जागृत करता है वरन् बुराई का निदान भी प्रस्तुत करता है। पत्रकारिता सामाजिक कुरीतियों (बाल विवाह, विधवा–उपेक्षा, दहेज उत्पीड़न, बहू की हत्या, वेश्यावृत्ति, अंध विश्वास) को मिटाने के लिए प्रभावी कदम उठाती है।

8. सम्प्रेषण का माध्यम – डॉ0 सुशीला जोशी के अनुसार, 'पत्रकारिता सम्प्रेषण का सामाजिक माध्यम है। यही वह साधन है जो हमें विश्व में होने वाले सम्पूर्ण नवीन आविष्कारों, घटनाओं, अनुसंधानों से परिचित कराकर प्रभावित करता है। 'उदन्त मार्तण्ड', 'समाचार सुधावर्षण', 'बंगदूत', 'बनारस अखबार', 'हिन्दी प्रदीप', 'भारत मित्र', 'ब्राह्मण' सदृश पत्रों ने आजादी की लड़ाई के समय न केवल जनता की चिन्तनधारा को प्रभावित किया वरन् निश्चेष्ट भारतवासियों को उद्‌बुद्ध भी किया। 'उतिष्ठ जागृत प्राप्यवरान्निबोधत' के अनुरूप भारतेन्दु की प्रेरणा से 'डूबत भारत नाथ वेगि जागो अब जागो' द्वारा भारत की युवा पीढ़ी को जागृत किया। सम्प्रति दूरदर्शन आदि के माध्यम से विश्व–क्षितिज पर अवतरित होने वाले विभिन्न उत्सवों के आयोजन, साक्षात्कार, परिचर्चा आदि कार्यक्रम जरता का ज्ञानवर्द्धन करते हैं।

9. महान लक्ष्य – पत्रकारिता का पवित्र लक्ष्य है– देश के कोने–कोने में जागरण, नवस्फूर्ति एवं नवसृजन के मंत्र को फूंकना। भारतीय स्वतंत्रता के संघर्ष में पत्रकारिता की भूमिका अविस्मरणीय रही है। सुप्त राष्ट्रवासियों को आजादी पाने के लिए जागरूक बनाने का महान कार्य पत्रकारिता द्वारा ही संभव हुआ। ''भारत के हम और हमारा भारत प्यारा, स्वतंत्रता है जन्मसिद्ध अधिकार हमारा'' के मंत्र को जन–जन में प्रचारित करने का कार्य पत्रकारिता ने ही किया। गुलामी के दिनों में यही स्वर गूँजता रहा– 'ऐ मादरे हिन्द न हो गमगी दिन अच्छे आने वाले हैं। आजादी का पैगाम तुझे हम जल्द सुनाने वाले हैं। माँ तुझको जिन जल्लादों ने दी है तकलीफ जईफी में। मायूस न हो, मगरूरों को हम जल्द मिटाने वाले हैं। – अर्जुन तिवारी

आज के समय में जनता को व्यक्तित्व निर्माण की प्रेरणा देने, उनकी रुचि को संस्कारित करने तथा आर्थिक, वैज्ञानिक प्रगति के साथ जन–जन को जोड़ने जैसे कार्य को साकार रूप देना ही पत्रकारिता का पावन लक्ष्य है।

10. संदेश प्रेषण का माध्यम – नवीनतम् आविष्कारों के चलते संवाद प्रेषण, मुद्रण एवं पत्र प्रसारण के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। गुमशुदा व्यक्तियों, अपहृत बालकों, रूठे हुए परिजनों तक संदेश भेजने का त्वरित कार्य पत्रकारिता द्वारा ही संभव है। आजकल तो दूरदर्शन के माध्यम से प्रिय खिलाड़ियों, अभिनेताओं को शुभकामना संदेश तथा वैलेन्टाइन डे पर प्रेमियों द्वारा एक–दूसरे के प्रति प्रेम सन्देश भेजने का प्रचलन जोरों पर है। मानव शक्ति के बिखरे हुए कणों को एकत्रित करने का कार्य पत्रकारिता द्वारा ही संभव है। किसी भी क्षेत्र में यदि किसी विषय पर जनमानस को संगठित करना हो तो आज यह कार्य पत्रकारिता जैसे सशक्त माध्यम से पल भर में ही संभव हो सकता है।

11. प्रेरणादायी एवं जागरूक – जागरण की प्रक्रिया बहुमुखी, बहुआयामी और सर्वव्यापी होती है। यह प्रक्रिया पत्रकारिता द्वारा सतत् प्रवाहित होती है। पराधीन भारत की पत्रकारिता का चरित्र प्रेरणादायक था। उसके द्वारा भारतीयों के ह्रदय में त्याग और बलिदान की भावना का संचार किया गया। उस समय के पत्रकार झुकते नहीं थे भले ही टूट जाते थे। उस समय की पत्रकारिता को अग्निवर्षा पत्रकारिता का नाम दिया गया था। विभिन्न पत्रों ने फिरंगी दमन

चक्र को चुनौती देते हुए आजादी के संघर्ष को गति प्रदान की। आजादी के बाद भी पत्रकारिता ने जश्न नहीं मनाया वरन् राष्ट्र में व्याप्त हाहाकार एवं अव्यवस्था के प्रति राजनीतिज्ञों एवं जनता को जागरूक किया। तेजपुंज पत्रकारों ने राजनेताओं का पथ प्रदर्शन किया। सन् 1948 से 1974 ई0 तक की अवधि में 'आज जीत की रात पहरूये सावधान्' द्वारा गिरिजा कुमार माथुर ने दायित्व बोध से परिचित कराया तो "वही गाँव–गाँव पाँतर–पाँतर को हम भू–स्वर्ग बनायेंगे" की प्रतिज्ञा नागार्जुन ने दोहरायी। – अर्जुन तिवारी

12. मानवीय गुणों के विकास में सहायक – प्रताड़ना, जेल यातना से जूझ कर पत्रकारों ने हिन्दी पत्रकारिता की पुष्ट आधारशिला रखी। पत्रकारिता के अध्येता अपने तेजस्वी पत्रकार पूर्वजों से प्रेरणा ग्रहण कर अपने चरित्र को मानवीय गुणों से युक्त बना सकते हैं। पत्रकार सत्य के उद्गाता, स्वतंत्रता के अनुष्ठाता एवं कर्त्तव्य पथ के अनवरत् पथिक होते हैं। उनके यह गुण जनमानस को प्रभावित करते हैं। जनमानस में निर्भीकता एवं स्वतंत्र निर्णय की क्षमता जागृत होती है। पत्रकारिता मानव के अन्तर्मन पर पड़े अज्ञान के आवरण को छिन्न–भिन्न कर आलोक की किरण विकीर्ण करती है।

13. सुदृढ़ कड़ी – पत्रकारिता सरकार एवं जनता के मध्य सुदृढ़ कड़ी है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि जनता के हित के लिए पत्रकार सरकार के सामने दीवार बनकर खड़े हो जाते हैं। समाचार पत्रों के माध्यम से ही जनता सरकार की नीतियों के औचित्य–अनौचित्य से परिचित होती है। पत्रकारों के द्वारा किया गया सरकारी नीतियों का विश्लेषण जनता को तथ्यों से अवगत कराता है। जनता की विचारध ारा पत्रकारिता से अधिक प्रभावित रहती है।

14. जीवन का आधार – नवीन परिवेश में पत्रकारिता मानव जीवन का सुदृढ़ आधार बन चुकी है। आज पूरे विश्व की खबरें एक मिनट में ही जानने की इच्छा होती है। यह कार्य पत्रकारिता द्वारा बड़ी कुशलता पूर्वक निभागया जाता है। समाज का प्रत्येक वर्ग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पत्रकारिता पर निर्भर है। वकील, अध्यापक, विद्यार्थी, बेरोजगार, वैज्ञानिक, बच्चे, किशोर सभी अपनी–अपनी आकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए पत्रकारिता की ओर आशा भरी निगाहों से देखते हैं। हिन्दी पत्रकारिता मानव को प्रकाश की ओर ले जाने वाली किरण है। यह सारस्वत यज्ञ है जिसमें अधिकांश पत्रकार परिवेश की चिंता कर रहे हैं तथा अपने चिंतन से पाठकों के मानस का उन्नयन कर रहे हैं। भारत की अखण्डता, सर्वधर्म समभाव, विश्व–बन्ध ुत्व की भावना को पुष्ट करने के लिए हिन्दी पत्रकारिता सत्यं शिवं सुन्दरम् का शंखनाद कर रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पत्रकारिता के प्रतिमान : प्रेमचन्द गोस्वामी।
2. हिन्दी शब्द सागर : श्याम सुन्दर दास, पृ0 279.
3. वैज्ञानिक परिभाषा : डॉ0 बद्रीनाथ कपूर, पृ0 117.
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ0 नगेन्द्र
6. हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास : गुलाब राय।
7. हिन्दी भाषा एवं साहित्य का इतिहास : डॉ0 रामस्वरूप आर्य।
8. पत्रकारिता एवं निबंध लेखन : डॉ0 रामस्वरूप आर्य।
9. हिन्दी पत्रकारिता : सिद्धान्त और स्वरूप : सविता चढ्ढा।
10. हिन्दी पत्रकारिता : हरिमोहन।
11. जन पत्रकारिता एवं जनसंचार : प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित।